P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गांधीय राजदर्शनः तत्वमीमांसीय अध्ययन

Gandhian Political Philosophy : A Metaphysical Study

सारांश (Abstract)

गांधीवाद दर्शन इस बात पर जोर देता है कि राजनीतिक जीवन मानवीय और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए । गांधी का राजनीतिक दर्शन नैतिकता सौन्दर्य ओर आध्यात्मिकता को एकीकृत करता है । यह सब सत्य पर उनके आग्रह पर आधारित है । इस लेख में चर्चा की की गई है कि गांधी ने दार्शनिक और राजनीतिज्ञ के पहलुओं को अपनें भीतर कैसे समाहित किया । लेख इस बात की पुष्टि करता है कि गांधी की धारणा में कोई द्वैतवाद नहीं है और राजनीति के लिए यही उनका धर्म था ।

Gandhian philosophy insists that political life should be both humane and purposive. Gandhi's Political philosophy integrates the ethical, the moral, the aesthetic and the spiritual – all grounded upon his insistence on 'truth'. This paper discusses how Gandhi combined within himself the aspects of the philosopher and the politician. The paper explores that there is no dichotomy in Gandhi's perception and to him politics it self was his religion.

मुख्य शब्द : सत्य, अहिंसा, प्रेम, नैतिकता, ईश्वर, सत्याग्रह ।
Keywords: Truth, Nonviolence, Love, Morality, God, satyagraha

सविता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबा नारायणदास राजकीय कला महाविद्यालय,
चिमनपुरा, शाहपुरा
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

शांति, प्रेम एवं अहिंसा के दूत महात्मा गांधी के जीवन दर्शन में मानवता के उच्चतम आदर्शों का समावेश निहित है। उनके जीवन–दर्शन में सत्य, अहिंसा, प्रेम एवम् शान्ति का अमर सन्देश झलकता है। सत्य के प्रति उनकी निष्ठा ने गांधीजी को राजनीति के क्षेत्र में खींचा।[1] वे राजनीति को अपरिहार्य दोष के रूप में देखते थे।[2] भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर गांधीजी का आविर्भाव इतिहास के उस मोड़ पर हुआ, जब सोवियत संघ में जोसेफ स्टालिन का उदय हो रहा था और वह हिंसा में प्रबल विश्वास रखता था। इसके बिल्कुल विपरीत महात्मा गांधी ने अहिंसा का समर्थन किया। ज्यां पाल सार्त्र ने एक बार कहा था – ''यदि विश्व में रक्त की एक बूँद बहाए बिना 'कुछ' होने का सपना किसी दर्शन में है तो वह है गांधी दर्शन में।'' यह गांधी दर्शन की ही एक विशिष्टता है कि बिना रक्त की एक बूंद बहाए वे एक ऐसा दर्शन प्रतिपादित करने में और उसे क्रियान्वित करने में सफल हुए जिसने राजनीतिक सामाजिक क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न की।

राजदर्शन का वैशिष्टय

महात्मा गांधी मौलिक रूप से राजनीतिक विचारक नहीं थे और न ही उन्हें प्लेटो एवं अरस्तू जैसे दार्शनिकों की श्रेणी में रखा जा सकता है अपितु वे एक ऐसे संत राजनीतिज्ञ थे जिन्हें ईश्वर में अटूट आस्था थी। महात्मा गांधी मूल रूप में एक देशभक्त आंदोलनकारी थे जिनके जीवन का प्राथमिक उद्देश्य भारत को स्वतंत्र कराना था। लेकिन अपने प्राथमिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अन्य विचारकों की भॉति वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर विचार करने और उसे परिवर्तित करने के लिए पुस्तकालयों अथवा अध्ययन केन्द्रों में बैठकर कभी अध्ययन मनन नहीं किया और न ही उन्हें ऐसी कभी अनुभूति हुई कि उन्हें ऐसा करना चाहिए। महात्मा गांधी ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में विश्व के तीन महाद्वीपों में कार्य किया तथा भारत व दक्षिणी अफ्रीका को अपना कर्मक्षेत्र बनाया और यही उनकी प्रयोगशाला बने। इन प्रयोगशालाओं में एक समाजवैज्ञानिक की भॉति समाज की समस्याओं के समाहार के लिए उन्होंने निरन्तर प्रयोग किए। इन प्रयोगों के परिणामस्वरूप उन्होंने सत्य एवं अहिंसा की एक ऐसी प्रविधि

विकसित की जिसने न केवल अहिंसक तरीके से भारत को स्वतंत्रता दिलाई बल्कि विश्व के अन्य देशों ने भी इन प्रविधियों का प्रयोग करके सफलता प्राप्त की।

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की सबसे बड़ी विशिष्टता यह है कि उनका आधार आध्यात्मिक है और वे राजनीति को भी इसी आध्यात्मिक मूल की एक शाखा के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि गांधी जी राज्य, स्वराज्य, लोकतंत्र, संसदीय व्यवस्था, अधिकार एवम् कर्तव्य, स्वतंत्रता, समानता आदि प्रश्नों पर विचार करते समय उन्हें सत्य, अहिंसा एवं नैतिकता जैसी कसौटियों पर परखते हैं और उस पर खरा उतरने के बाद ही उन्हें स्वीकार करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य यह साबित करना है कि मानवता को विनाश से बचाने के लिए गांधीवादी दर्शन ही एकमात्र रास्ता है।

Aim of the Study

Main aim is to be proving that Gandhian philosophy is the only path to protect humanity from destruction.

राज–दर्शन का आधार

महात्मा गांधी सम्भवतः ऐसे प्रथम आंदोलनकर्ता थे, जिन्होंने अहिंसक साधनों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत के भविष्य की रूपरेखा को न केवल बदल डाला बल्कि उसे एक सृजनात्मक शक्ति और विचारों से भर दिया। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित की गई सत्याग्रह की तकनीक एक ऐसी तकनीक थी जिसने आम जनता को अहिंसक प्रतिरोध करना सिखाया। उनके राजदर्शन के निम्न आधार हैं।

सत्य

सम्पूर्ण गांधीय दर्शन का आधार सत्य निष्ठा है। उनकी विश्व को एकमात्र देन यह शिक्षा रही कि सत्य विश्व की समस्त वस्तुओं से ऊपर है तथा गुलामी एवं हिंसा सत्य के प्रतिकूल हैं। गांधीजी की यह मान्यता थी कि सत्य के द्वारा ही ईश्वर का अनुभव किया जा सकता हैं जब कभी कोई सच्ची बात कही जाती है, तब हम ईश्वर की सत्ता का अनुभव करते हैं।[3] वह है क्योंकि वह सत्य है। उनके लिए सत्य एवं ईश्वर समरूप है। इसके साथ ही गांधीजी यह भी स्वीकार करते हैं कि हम इस क्षणभंगुर शरीर के माध्यम से शाश्वत सत्य का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं कर सकते। ईश्वर के असंख्य नामों में से यदि एक का चयन किया जाए तो वह सत्य ही होगा। अतः सत्य ही ईश्वर है।[4]

अहिंसा

सत्य के पश्चात् गांधीजी के राजदर्शन का बुनियादी आधार है – अहिंसा। गांधीजी का कथन है कि अहिंसा मानव जाति का वैसा ही नियम है जैसे हिंसा जंगली का नियम है। जंगली में उसकी आत्मा प्रसुप्त होती है इसलिए वह पाशिवक शक्ति के अलावा अन्य कोई नियम नहीं जानता है, मानवीय गरिमा की यह मॉग है कि वह एक उच्च नियम की अधीनता स्वीकार करे, आत्मा के संघर्ष के नियम की अधीनता को। अहिंसा एक पूणविस्था है, अचेतन रूप से ही क्यों न हो, यह वह उद्देश्य है जिस ओर सम्पूर्ण मानवता अग्रसर हो रही है।[5] गांधीजी की यह दृढ़ मान्यता थी कि मानवता की समस्त समस्याओं का समाधान अहिंसा में निहित है। ईश्वर की प्राप्ति अहिंसा के माध्यम से ही की जा सकती है। क्योंकि सत्य व अहिंसा एक दूसरे से इस प्रकार गुँथे हुए हैं कि उन्हें एक दूसरे से पृथक् करना एक प्रकार से असम्भव है। सत्य एवं अहिंसा एक सिक्के के दो पहलू हैं। कौन कह सकता है कौनसा सीधा और कौनसा उल्टा पहलू है।[6] अहिंसा सत्य की प्राप्ति का साधन है और अपने आप में अत्यन्त सक्रिय शक्ति है।

प्रेम

सत्य एवं अहिंसा के साथ–साथ गांधीजी प्रेम को भी जीवन का महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य तत्व मानते थे। उनकी दृष्टि में ईश्वर हम सब में निवास करने वाली अदृश्य शक्ति है और नाखून मॉस के जितना निकट है वह हमारे उससे भी निकट है। चूंकि ईश्वर हम सबमें प्रत्येक में है। अतः बिना किसी अपवाद के हमें प्रत्येक मानव से तादात्म्य स्थापित करना चाहिए। बोलचाल की भाषा में इसे ही प्रेम कहते हैं।[7] प्रेम से अभिप्राय है कि मनुष्य को चाहिए कि वह काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह से ऊपर उठकर आत्मशक्ति को प्राप्त करे आत्मशक्ति मनुष्य को अपूर्व उत्साह प्रदान करती है क्योंकि उसमें सर्वशक्तिमान ईश्वर का अंश होता है। ईश्वर एक व्यक्ति नहीं है। मैं ईश्वर को एक व्यक्ति नहीं मानता, क्योंकि ईश्वर एक महान् विचार और अपने आप में विधि है।[8]

सत्याग्रह

गांधीजी इस तथ्य से भली–भांति परिचित थे कि समसामयिक समाज में हिंसा की जिस घातक प्रवृत्ति ने विस्तार पाया है, उससे बचने का एकमात्र मार्ग सत्य और अहिंसा है। उनके मत में हिंसा का उत्तर यदि हिंसा से दिया जाता है तो वह उचित नहीं है क्योंकि परिणामतः हिंसा की भावना का ही विकास होता है। अतः हिंसा का उत्तर अहिंसा से देना चाहिए। रूसी विचारक लियो टॉलस्टॉय की विचारधारा – पाप से घृणा करो पापी से नहीं'' ने गांधीजी को बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित किया। गांधीजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे विपरीत ध्रुवों में पुल बना देने में माहिर थे।[9]

अतः सत्याग्रह के रूप में एक ऐसी प्रविधि का विकास गांधीजी ने किया जो सत्य एवं अहिंसा का मिश्रित रूप थी। सत्याग्रह का प्रयोग सर्वप्रथम गांधीजी ने दक्षिणी अफ्रीका में किया। उन्होंने एक पेम्फलेट निकाला जिसमें उन्होंने अन्याय का प्रतिकार करने के लिए जिस शैली का जिक्र किया उसे ही सत्याग्रह कहा गया। मगनलाल गांधी ने ''सदाग्रह'' शब्द का सुझाव दिया था जिसे गांधीजी ने सत्याग्रह में रूपान्तरित कर दिया।[10]

गांधीजी यह मानते थे कि सत्याग्रह नैतिक और आध्यात्मिक रूप से पाशविक शक्ति पर सदैव विजयी होगा। सत्याग्रह आंदोलन में सफलता तभी संभव है जब सत्याग्रही जनता पर अपना नियत्रंण स्थापित कर सके। जनता पर नियंत्रण स्थापित करना तभी संभव होगा जबकि सत्याग्रही जनता के हृदय पर राज करें, इसके लिए उसे जनता से जीवित सम्बन्ध रखना होगा। सन् 1920 में सत्याग्रह की विवेचना करते हुए गांधीजी ने

लिखा था कि सत्याग्रह एक बरगद के वृक्ष की तरह है जिसकी बहुत सी शाखाऍं हैं। सत्य और अहिंसा मिलाकर इसके तने का निर्माण करते हैं, सविनय अवज्ञा इसकी एक शाखा है।[11]

निष्कर्ष

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी के चिन्तन का सर्वाधिक विलक्षण पक्ष यह है कि वे मानव को समस्त प्रकार के बंधनों से मुक्त करना चाहते हैं। उनकी सबसे बड़ी देन यह नहीं है कि उन्होंने भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलाई। आजादी तो उनके न होने पर भी मिलती क्योंकि यह एक ऐतिहासिक क्रम था। गांधीजी की देन तो आजादी दिलाने के तरीके में थी, जिसमें विरोध व्यक्ति समूह का नहीं किया गया अपितु व्यवस्था या तंत्र (लेजमउ) का किया गया। उन्होंने भावी पीढ़ियों को एक ऐसा जीवन दर्शन दिया जिसे अपना कर मानवता स्वयं को महाविनाश से बचा सकती है।

अंत टिप्पणी

1. *महात्मा गांधी, माई एक्सपेरिमेंट्स विद् ट्रुथ, खण्ड 2, पृ. 591*
2. *हरिजन, 24 दिसम्बर, 1938, पृ. 393*
3. *बी.सी. राय, गांधीयन एथिक्स, पृ. 5–9*
4. *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, खण्ड 78, पृ. 390*
5. *यंग इण्डिया, 14 अगस्त, 1920*
6. *मोहनदास करमचन्द गांधी, अहिंसा और सत्य, उत्तरप्रदेश गांधी स्मारिक निधि, वाराणसी, पृ. 624–30*
7. *उपरोक्त, पृ. 630*
8. *एम.के. गांधी, माई रिलीजन, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1960, पृ. 43*
9. *रजनी कोठारी, भारत में राजनीतिः कल और आज (हिंदी प्रस्तुति और सम्पादन – अभय कुमार दुबे), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2005, पृ. 81*
10. *महादेव प्रसाद, महात्मा गांधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, सन् 1989, पृ. 124*
11. *नरेश दाधीच, महात्मा गॉधी का चिन्तन, रावत पब्लिकेशन, सन् 2014, पृ. 217*